"शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नही अपितु भावात्मक और चारित्रिक विकास भी है और शिक्षक की भूमिका अभिभावक की भाँति विद्यार्थी को संरक्षण प्रदान करने की है"– ये विचार थे संगोष्ठी में आमंत्रित वक्ता के रूप में अपने विचार रखते महाविद्यालय प्राचार्य डॉ० कृष्णकान्त गुप्ता के.

उच्च शिक्षा में "अध्यापन, अधिगम और मूल्यांकन" विषय पर राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्ययन परिषद् द्वारा प्रायोजित और अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ के आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में 14 मार्च 2015 को देश भर से आए प्रबुद्ध विचारकों, चिन्तकों, शिक्षाविदों और शोधार्थियों ने वर्तमान में उच्च शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की, समय आ गया है जब हमे लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से बाहर निकल कर अपने देश के बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए कुछ गुणात्मक सुधार करने होगें. पिछले वर्षों में साक्षरता दर में तो वृद्धि हुई है लेकिन शिक्षा के स्तर में लगातार गिरावट भी देखी जा रही है– जो शिक्षाविदों के लिए चिन्ता का विषय है इस संगोष्ठी में जो विचार उभरकर आया वह यही है कि बदलते समय की माँग के अनुसार पाठ्यक्रम में पारिवर्तन अनिवार्य है और अध्यापक को भी अपने विद्यार्थियों के प्रति अपना उत्तरदायित्व तय करना होगा. विद्यार्थियों में तार्किक क्षमता विकसित करके शिक्षा के स्तर को बढ़ाया जा सकता है.

संगोष्ठी के समापन समारोह के अवसर पर उपस्थित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अतिरिक्त सचिव डॉ० (श्रीमती) पंकज मित्तल ने अपने वक्तव्य में बताया कि एक शिक्षक में आत्मविश्वास, वचनबद्धता और क्षमता का होना अनिवार्य है. उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि करने के लिए किसी भी विषय पर उन्हें सोचने के लिए मजबूर किया जाये. शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए गुणवत्ता से समझौता नही करना चाहिए. समाज में और शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता हे और उसका पूर्ण दायित्व शिक्षक पर है एक जागरुक शिक्षक ही अच्छे नागरिक का और समाज का निर्माण कर सकता है. उन्होंने ने बताया कि दुनिया में दो तरह के लोग है –

कुछ लोग जो वक्त के साँचे में ढल गये,

कुछ लोग जो वक्त के साँचे बदल गये.

एक शिक्षक को शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाते हुए वक्त के साँचे को बदलना है.

समापन समारोह की अध्यक्षता कर रहें अधिवक्ता और अग्रवाल महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के महासचिव श्री विजय कुमार गुप्ता (एडवोकेट) ने शिक्षकों के बढ़ते उत्तरदायित्व पर विश्वास जताते हुए कहा कि आज के शिक्षक अपनी चुनौतियों को भली–भाँति समझते हैं.
इस संगोष्ठी में प्रो० दोरायराज विक्टर, प्रो० सुनील उन्नी गुप्तन, प्रो० राजीव गुप्ता, प्रो० एस.के. चक्रवर्ती, डॉ० दिनेश चहल ने आमन्त्रित वक्ता आए जिन्होंने विस्तारपूर्वक वर्तमान शिक्षा पद्धति पर विचार व्यक्त किये.